साहित्योत्सव
Festival of Letters
21 - 26 February 2017

साहित्य अकादेमी

दैनिक समाचार बुलेटिन

शुक्रबार, 24 फ़रवरी 2017

डॉ. नामवर सिंह चुने गए साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य

एक भारतीय लेखक के लिए साहित्य अकादेमी का सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता है। यह सम्मान विशिष्ट साहित्यकारों के लिए सुरक्षित है और एक समय में कुल 21 महत्तर सदस्य हो सकते हैं। साहित्य अकादेमी की सामान्य सभा की 22 फ़रवरी 2017 की बैठक के अनुसार हिंदी के प्रख्यात लेखक डॉ. नामवर सिंह को अकादेमी का महत्तर सदस्य चुना गया।

डॉ. नामवर सिंह हिंदी के प्रख्यात लेखक, आलोचक और विद्वान हैं तथा अनेक वर्षों से हिंदी में अग्रणी आलोचना-स्वर बने हुए हैं। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। वे *जनयुग* (साप्ताहिक) और *आलोचना* पत्रिका के संपादन से जुड़े रहे। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, सागर विश्वविद्यालय, जोधपुर विश्वविद्यालय एवं जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में हिंदी का अध्यापन किया है। दो बार महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी रहे। उन्हें अनेक प्रतिष्ठित सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें प्रमुख हैं : साहित्य अकादेमी पुरस्कार, हिंदी अकादमी, दिल्ली का शलाका सम्मान, हिंदुस्तानी अकादमी सम्मान, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का साहित्य भूषण सम्मान आदि। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं : *बकलम खुद, आधुनिक हिंदी की प्रवृत्तियाँ, छायावाद, पृथ्वीराज रासो की भाषा, इतिहास और आलोचना, वाद विवाद संवाद, दूसरी परंपरा की खोज, कहानी-नयी कहानी, हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योगदान, कविता के नये प्रतिमान* आदि।

डॉ. रामचंद्र गुहा द्वारा संवत्सर व्याख्यान

साहित्योत्सव के अंतर्गत 23 फ़रवरी 2017 की शाम को प्रख्यात विद्वान एवं इतिहासकार डॉ. रामचंद्र गुहा ने अकादेमी की प्रतिष्ठित संवत्सर व्याख्यानमाला के अंतर्गत 'ऐतिहासिक जीवनी का शिल्प' विषयक व्याख्यान दिया। आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए डॉ. गुहा का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने पुष्पगुच्छ और किताबें भेंटकर उनका अभिनंदन किया।

डॉ. गुहा ने बताया कि कैसे वेरियन एल्विन के जीवन एवं कृतित्व ने उन्हें एवं उनके दृष्टिकोण को पूरी तरह बदल दिया। उन्होंने उनकी जीवनी लेखन के अपने प्रयत्न को संदर्भित करते हुए जीवनी लेखन की चुनौतियों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक जीवनी इतिहास का वह हिस्सा है, जो साहित्य से सबसे ज़्यादा जुड़ा हुआ है। इतिहास समाजशास्त्र और साहित्य के बीच डोलती है। इतिहासकारों द्वारा जीवनी लेखन से दूर रहने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने इसका पहला कारण धार्मिक विरासत को बताया। हिंदुत्व जैसे धर्म कर्म एवं पुनर्जन्म आधारित व्यवस्था पर अपने पारंपरिक विश्वास के नाते जीवनी लेखन के विरोधी हैं। दूसरा कारण वैचारिक विरासत है, विशेषकर मार्क्सवाद, चूँकि मार्क्सवाद व्यक्ति को कम महत्त्व देता है। तीसरा कारण इतिहास का समाजशास्त्र के प्रति झुकाव है, यद्यपि इतिहास साहित्य की शाखा के रूप में शुरू हुआ। चौथा कारण भारतीयों द्वारा अभिलेख की भिन्नताएँ हैं। देश के केंद्रीय एवं राज्य अभिलेखागार पूरी तरह अव्यवस्थित हैं। पाँचवा कारण यह है कि भारतीय जीवनी लेखन में प्रतिष्ठित व्यक्तियों के दोषों के उल्लेख में संकोची हैं। छठा कारण यह है कि जीवनी लेखन चुनौतीपूर्ण साहित्यिक विधा है। सातवाँ कारण यह है कि जीवनी लेखन में एक लेखक को अपने अहं को दबाकर दूसरे अहंकारी लेखक के बारे में लिखना होता है। मुख्यतः यही वे कारण हैं, जिनके कारण ऐतिहासिक जीवनियों को व्यापक स्वीकृति कभी नहीं मिली। उन्होंने जीवनी लेखन के चार केंद्रीय सिद्धांत बताए : (क) द्वितीयक चरित्र भी कहानी के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं, (ख) जीवनी लेखक को केंद्रीय चरित्र के अलावा भी अन्य स्रोतों को भी देखना चाहिए, (ग) जीवनी लेखक को पूर्वाग्रही नहीं होना चाहिए; तथा (घ) जीवनी लेखक दूसरी जीवनियों से प्रभावित नहीं होना चाहिए। व्याख्यान के बाद डॉ. गुहा ने सुधी श्रोताओं द्वारा की गई जिज्ञासाओं का भी शमन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लेखक, विद्वान और साहित्यप्रेमी उपस्थित थे।

युवा साहिती : युवा लेखक सम्मिलन

साहित्योत्सव के तीसरे दिन की शुरुआत पूरे देश के युवा रचनाकारों की सृजनात्मकता को एक मंच पर प्रस्तुत करने के कार्यक्रम 'युवा साहिती : नई फ़सल' के साथ हुई। प्रख्यात तमिळ लेखक बी. जयमोहन ने उद्घाटन भाषण दिया। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रख्यात तेलुगु लेखक और लोकगीतकार गोरेटी वेनकन्ना उपस्थित थे। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत करते हुए युवा लेखकों के लिए अकादेमी की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया। बी. जयमोहन ने उद्घाटन भाषण में पिछले सौ वर्षों में आधुनिक तमिळ काव्य में धर्म और संस्कृति की उपस्थिति पर अपनी बात प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि हमारे आधुनिक साहित्य में धर्म और संस्कृति के प्रतीक पश्चिमी दबाव के कारण ग़ायब होते जा रहे हैं। जब कि नई पीढ़ी को भी धर्म और संस्कृति से वर्तमान को पहचानने की दृष्टि मिलनी चाहिए। तेलुगु गायक और लेखक गोरेटी वेनकन्ना ने दो गीत प्रस्तुत किए। सस्वर गाए गए इन गीतों ने श्रोताओं को बेहद प्रभावित किया। इसके बाद अविनुयो किरे (अंग्रेज़ी), प्रतिष्ठा पंड्या (गुजराती), निशांत (हिंदी), बी. रघुनंदन (कन्नड), समप्रीथा केश्वन (मलयाळम्) और मोइन शादाब (उर्दू) ने अपनी-अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। सभी कवियों ने एक कविता अपनी मातृभाषा में प्रस्तुत की तथा शेष कविताओं के अंग्रेज़ी/हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किए।

युवा साहिती के पहले सत्र में प्रख्यात लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य मनोज दास से युवा लेखकों का संवाद कराया गया। युवाओं ने उनकी रचना-प्रक्रिया तथा वर्तमान में विभिन्न दबावों के बीच उत्कृष्ट रचनाओं का सृजन कैसे हो इस पर उनकी राय जानी। मनोज दास ने युवा लेखकों को मिथकीय कहानियों का पुनर्लेखन करते हुए अथवा मिथकीय चरित्रों को पुनर्परिभाषित करते हुए विशेष ध्यान देने का सुझाव दिया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता अंतरा देव सेन ने की और इसमें बिपाशा बोरा (असमिया), देवदान चौधुरी (अंग्रेज़ी) और एस. राजमणिखाम (तमिळ) ने 'लेखन : जुनून या व्यवसाय' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र में वक्ताओं ने श्रोताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए। विमर्श में यह बात उभर कर सामने आयी की लेखन व्यवसाय की अपेक्षा जुनून ही ज्यादा है।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता कवि ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने की, जिसमें सायंतनि पुतातुंडा (बाङ्ला), परगत सिंह सतौज (पंजाबी), पूदूरी राजी रेड्डी (तेलुगु) और कोमल दयालानी (सिंधी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

चतुर्थ एवं अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कवि बोधिसत्व ने की, जिसमें केवल कुमार केवल (डोगरी), मुज़फ़्फ़र हुसैन दिलबीर (कश्मीरी), इकनाथ गाउँकर (कोंकणी), चंदन कुमार झा (मैथिली), सुशील कुमार शिंदे (मराठी), बुद्धिचंद्र हेइसनाम्बा (मणिपुरी), अमर बानिया लोहोरू (नेपाली), इप्शिता षड़ंगी (ओड़िया), राजू राम बिजारणिया 'राज' (राजस्थानी) और महेश्वर सोरेन (संताली) ने अपनी-अपनी कविताएँ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ पढ़ीं।

लेखक सम्मिलन

अकादेमी पुरस्कार विजेताओं ने साझा की अपनी रचना-प्रक्रिया

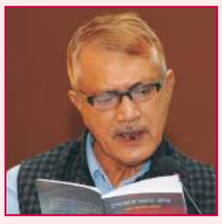

23 फ़रवरी 2017 को 'लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम के अंतर्गत साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 से पुरस्कृत लेखकों ने अपने रचनात्मक अनुभव साझा किए, जिसकी अध्यक्षता अकादेमी के अध्यक्ष डॉ चंद्रशेखर कंबार ने की। सम्मिलन में उपस्थित 20 लेखकों ने संक्षेप में अपने विचार व्यक्त किए।

हिंदी के लिए पुरस्कृत नासिरा शर्मा ने कहा, "कभी जन्नत तो कभी दोज़ख़" यह वाक्य दरअसल मेरी ज़िंदगी का निचोड़ है और उसी स्वर्ग-नर्क को झेलते हुए मेरे किरदार मेरे लेखन के दायरे में साँस लेते नज़र आते हैं। ज़मीन पर बसी जन्नत व दोज़ख़ मेरी काया में प्रवेश कर अपनी सैर पर मुझे ले जाती है चाहे वह इलाहाद की गलियाँ हों या फिर पश्चिमी एशिया के सुलगते देश। जो आग आपको जला न रही हो मगर उसकी तपिश को आप दूर से महसूस करते हैं उसकी आँच आपको पिघलाती और पन्ने रंगवा लेती है।"

मैथिली में पुरस्कृत श्याम दरिहरे ने कहा, "जहाँ तक मैथिली कहानी लेखन का प्रश्न है तो वह मिथिला की विशिष्ट संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती आज भी दिखलाई देती है। पैदल यात्रा की आदी मैथिली कथा आज गगनगामी और अंतरिक्षचारी हो गई है। वह कथानक संबंधी सभी विषयों को अपने में यथोचित स्थान दे रही है। इतनी विविधता के बाद भी मैथिली कहानी एक अघोषित, अदृश्य और अपरिभाषित सांस्कृतिक सीमा रेखा के अंदर अपनी मैथिली मिठास को बचाए हुए है।"

मराठी में पुरस्कृत आसाराम लोमटे ने कहा, "बाज़ार में स्वास्थ्यकारक जीने के उत्पादनों की चाहे जैसी भरमार हो, लेखक को लेकिन स्वस्थ लेखन ही करना चाहिए। मैं ऐसा लेखन करने की कोशिश में हूँ कि जिसे पढ़ने पर सवाल खड़े हों, नींद उड़ जाए, अनगिनत भौरों का छत्ता फूट पड़े और पढ़नेवालों को वे दंश दे। मैंने देखा है कि पैरों में काँटा चुभने पर होनेवाली पीड़ा को दूर करने के लिए उस जगह पर मोम लगाकर आग से दागा जाता है। लिखने को मैं इसी तरह की दागने की बात मानता हूँ।"

कश्मीरी लेखक अज़ीज़ हाजिनी ने कहा कि कवि और लेखक कोई देवदूत या किसी दूसरी दुनिया के लोग नहीं होते वो भी आम आदमी की तरह होते हैं जिनकी सृजनात्मक क्षमताएँ कुछ अलग होती हैं। समाज की विभिन्न गतिविधियों में शामिल होते हुए भी लिखते समय वे उनसे अलग होकर कुछ बेहतर कह पाते हैं। इस अवसर पर ज्ञान पुजारी (असमिया), नृसिंह प्रसाद भादुड़ी (बाड्ला), अंजली बसुमतारी (बोडो), कमल वोरा (गुजराती), बोलवार महमद कुंञि (कन्नड), एड्वीन जे.एफ़ डिसोजा (कोंकणी), प्रभा वर्मा (मलयाळम्), मोइराङ्थेम राजेन (मणिपुरी), गीता उपाध्याय (नेपाली), पारमिता शतपथी (ओड़िया), स्वराजबीर (पंजाबी), गोविंद चंद्र माझी (संताली), वन्नदासन (तमिऴ), पापिनेनी शिवशंकर (तेलुगु), बुलाकी शर्मा (राजस्थानी) एवं निज़ाम सिद्दीकी (उर्दू) ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

साहित्योत्सव
Festival of Letters
21 - 26 February 2017

सांस्कृतिक कार्यक्रम

जवारलाल नेहरू मणिपुर डांस अकादमी के कलाकारों द्वारा लाई हारोबा, माव और काबुई नृत्यों की प्रस्तुति

साहित्योत्सव के कार्यक्रम

आज के कार्यक्रम

आमने-सामने (**अकादेमी पुरस्कार 2016 से पुरस्कृत लेखकों से बातचीत**) पूर्वाह्न 10.00 बजे, मेघदूत रंगशाला-III

पूर्वोत्तरी (**उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन**) पूर्वाह्न 10.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

राष्ट्रीय संगोष्ठी : **लोकसाहित्य : कथन एवं पुनर्कथन** पूर्वाह्न 11.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम : **बाउल गान** सायं 6.00 बजे, मेघदूत रंगशाला-I

25 फ़रवरी 2017 (शनिवार)

लोकसाहित्य : कथन एवं पुनर्कथन विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी (जारी) (साहित्य अकादेमी सभागार, पूर्वाह्न 10.00 बजे)

आदिवासी लेखक सम्मिलन (पैनल चर्चा, आदिवासी सृजन मिथकों का सस्वर पाठ एवं आदिवासी भाषा कवि सम्मिलन) (रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.30 बजे)

आओ कहानी बुनें (बच्चों के लिए मैजिक शो, कहानी की नाटकीय प्रस्तुति एवं कहानी लेखन, निबंध लेखन प्रतियोगिताएँ आदि) (रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 11.00 बजे)

सांस्कृतिक कार्यक्रमः संताली नृत्य (मेघदूत रंगशाला-I, सायं 6.00 बजे)

26 फ़रवरी 2017 (रविवार)

लोकसाहित्य : कथन एवं पुनर्कथन विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी (जारी) (साहित्य अकादेमी सभागार, पूर्वाह्न 10.00 बजे)

अनुवाद पुनर्कथन के रूप में विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी (रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.30 बजे)

भारत की अलिखित भाषाएँः परिसंवाद (रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 11.00 बजे)

साहित्य अकादेमी

रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001

दूरभाष : 011 23386626/27/28, फ़ैक्स : 011 23382428

ईमेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

वेबसाइट : www.sahitya-akademi.gov.in

फ़ेसबुक : http://www.facebook.com/Sahityaakademi